بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **17.02.17** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

तेरे मानने वालों को तेरा इंकार करने वालों पर अल्लाह तआला क़यामत तक गल्बः देगा, इसमें संकेत है कि अल्लाह तआला एक दिन मुझे छवि के रूप में नबियों का नाम देने वाला है

क्यूँकि ख़लीफ़ः की जमाअत उसके जीवन तक होती है निधन के पश्चात केवल नबियों की जमाअत अथवा उनकी छवि की जामअत चलती है

इसी प्रकार كَفَرُوا के शब्द ने भी इसी ओर संकेत किया है कि ख़िलाफ़त के बाद मुझे एक अन्य प्रतिष्ठा मिलने वाली है जो कुछ नबियों की छवि के रूप में होगी

हज़रत मुस्ले मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के इलहाम, स्वप्न व कश्फ़ों के प्रकाश में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. का महानतम स्थान तथा स्तर

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

जैसा कि हम जानते हैं कि 20 फ़रवरी का दिन जमाअत में पेशगोई मुस्लेह मौऊद के हवाले से जाना जाता है यह एक बड़ी महान पेशगोई है जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक महान बेटे के जन्म की भविष्य वाणी की गई, जिसकी असंख्य विशेषताएँ बयान की गईं जिसकी लम्बी आयु पाने की सूचना भी थी तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित जमाअत की मुस्लेह मौऊद के युग में अत्यधिक प्रगति की पेशगोई भी थी। अहमदिया जमाअत का इतिहास साक्षी है कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुददीन महमूद अहमद अलमुस्लेह अलमौऊद के 52 वर्षीय ख़िलाफ़त के दौर में इस पेशगोई की समस्त बातें शब्दों के अनुसार ही पूरी हुईं। एक न्याय प्रिय के लिए, एक आध्यात्मिक आँख रखने वाले के लिए यही एक भविष्य वाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का बड़ा प्रमाण है। तीन दिन बाद 20 फरवरी आने वाली है आज में इस हवाले से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के अपने शब्दों में बयान किए हुए कुछ वृत्तांत पेश करुंगा जो पवित्र आत्मा का होने के संदर्भ में आपके अस्तित्व में पूरा होने पर प्रकाश डालते हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु को 1914 में अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के पद पर सुशोभित फरमाया। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के अस्तित्व में समस्त बातें पूरी होती हुई दिखाई देती हैं। उस समय भी जमाअत के आलिम तथा जमाअत के लोग अधिकांशतः यही समझते थे कि आप ही मुस्लेह मौऊद हैं परन्तु हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने स्वयं इस बात की घोषणा नहीं की यहाँ तक कि 1944 का वर्ष आया। आपने अपने एक सपने के आधार पर यह ऐलान किया कि मैं ही मुस्लेह मौऊद हूँ। यह भी फ़रमाया कि मेरे स्वभाव की दृष्टि से यह मेरे लिए बड़ी कठिन परिस्थिति है, बड़ा बोझ है कि यह घोषणा करूँ। यदि मैं मुस्लेह मौऊद हूँ तथा भविष्य वाणी मुझ पर पूरी हो रही है तो ठीक है, किसी दावे की क्या आवश्यकता है। लोगों को जवाब देते हुए आपने एक बार यह भी फ़रमाया कि मुस्लिम उम्मत में जो मुजद्दिदों की सूचि है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दिखाने के बाद प्रकाशित हुई है, उनमें से कितने हैं जिन्होंने दावा किया हो। अतः गैर मामूरीन (जो इस पद पर नियुक्त न हों) के लिए दावा आवश्यक नहीं, दावा केवल मामूरीन की पेशगोइयों के विषय में अनिवार्य है। गैर मामूरीन के केवल काम को देखना चाहिए। यदि काम पूरा होता हुआ नज़र आ जाए फिर उसके दावे की क्या आवश्यकता है। मामूर मुजद्दिद केवल वही हो सकता है जो दावा करे जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया। इस प्रकार मेरी ओर से मुस्लेह मौऊद होने के दावे की कोई आवश्यकता नहीं तथा विरोधियों की ऐसी बातों से घबराहट की भी आवश्यकता कोई नहीं हमें। इसमें अपमान की कोई बात नहीं, वास्तविक सम्मान वही होता है जो ख़ुदा तआला की ओर से मिलता है चाहे दुनया की दृष्टि में इंसान अपमानित समझा जाए। यदि वह ख़ुदा तआला के मार्ग पर चलेगा तो

उसके दरबार में वह अवश्य सम्मानित होगा और यदि कोई व्यक्ति झूठ से काम ले फिर अपने दावे को प्रमाणित भी कर दे तथा अपनी चतुराई से लोगों में गल्बः भी प्राप्त कर ले तो ख़ुदा तआला के दरबार में वह सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता तथा जिसे ख़ुदा तआला के दरबार में सम्मान प्राप्त नहीं है वह चाहे प्रत्यक्ष रूप से कितना ही आदरणीय क्यूँ न समझा जाए, उसने कुछ खोया ही है, प्राप्त नहीं किया तथा अन्ततः एक दिन वह अपमानित होकर रहेगा। अतः दीन तथा दुनया के कामों में सदैव सत्य को धारण करो। जो व्यक्ति ख़ुदा के लिए कठिनाई उठाता है, वह वास्तव में लाभ में रहता है। इस प्रकार एक मूल सिद्धांत भी आपने इस सम्बंध में बयान फ़रमा दिया कि जिस सत्य के संग ख़ुदा तआला है, जिसको अल्लाह तआला सच्चा समझता है वह अल्लाह तआला के क्रिया शील साक्ष्य से भी ज़ाहिर हो जाता है। आवश्यक नहीं कि उसके लिए दावा अथवा ऐलान किया जाए। हाँ यदि अल्लाह तआला चाहे कि ऐलान हो, तो इसका ऐलान भी हो जाता है। अतः यदि किसी को परखना है कि वह ख़ुदा तआला की इच्छानुसार काम कर रहा है अथवा अल्लाह तआला की ओर से है तो फिर उसे ख़ुदा तआला के समर्थन के द्वारा परखना चाहिए। इस प्रकार जब अल्लाह तआला ने आप रज़ी. को कहा कि दावा करें तो फिर आप रज़ी. ने घोषणा भी कर दी कि मैं ही पेशगोई मुस्लेह मौऊद का यथार्थ हूँ। इस घोषणा पर जहाँ एक ओर तो जमाअत के लोग खुश थे वहीं गैर मुबायीन (जिन्होंने बैअत नही की थी) ने आपत्तियाँ भी शुरु कर दीं।

इस प्रकार 1945 के जलसा सालाना की 27 तारीख़ के भाषण में आप रज़ी. मौलवी मुहम्मद अली साहब के बयान के संदर्भ में फ़रमाते हैं कि जब से मैंने मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा की है मौलवी मुहम्मद अली साहब ने वैसी ही आपत्तियाँ करनी शुरु कर दी हैं जैसी मौलवी सनाउल्लाह साहब किया करते थे। मैं सपना अथवा इलहाम सुनाता हूँ तथा अल्लाह तआला के कहने के कारण ऐलान करता हूँ परन्तु मौलवी मुहम्मद अली साहब न तो इसके विरोध में कोई सपना अथवा इलहाम पेश करते हैं तथा न ही वे पेश कर सकते हैं क्यूँकि जब इलहाम हुआ ही नहीं तो इलहाम पेश कैसे करें। अब आपत्तियों के अतिरिक्त उनके पास कोई बात नहीं, यदि वे आपत्ति न करें तो विरोध किस प्रकार करें। हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा के दुश्मन इस बात का तो इंकार नहीं कर सकते कि इलहाम होता ही नहीं क्यूँकि उनसे पहले नबियों को इलहाम होता था तथा वे इस बात के समर्थक थे इस लिए उन नबियों का इंकार करने वाले इस बात का इंकार नहीं कर सकते थे कि इलहाम कोई चीज़ नहीं। अपनी बात को उचित प्रमाणित करने के लिए तथा नबियों का विरोध करने के लिए यह कहते थे कि उनके इलहाम घड़े हुए थे। इसी प्रकार आज मौलवी मुहम्मद अली साहब यह कहते हैं कि मेरे इलहाम झूठे हैं परन्तु क्यूँ अल्लाह तआला उनको मेरे विरोध में सच्चे इलहाम नहीं कर देता ताकि दुनया के सामने स्पष्ट हो जाए कि मौलवी साहब हक़ पर हैं तथा मैं असत्य पर हूँ। आप फ़रमाते हैं कि आश्चर्य है कि एक व्यक्ति दिन रात अल्लाह तआला के बन्दों को पथभ्रष्ट करे तथा दिन रात उसके बन्दों को धोखे और कपट से अनुचित मार्ग की ओर ले जाए परन्तु फिर भी अल्लाह तआला को लाज न आए। यदि अल्लाह तआला को लाज नहीं आती तो इसका कारण निःसन्देह इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कि अल्लाह तआला यह जानता है कि मौलवी साहब उसकी निकटता से बहुत दूर हैं इस लिए अल्लाह तआला ने उनको इलहाम नहीं किया। अतः सत्य के विरोध में सदैव इंकार होता रहा है।

अब मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु के कुछ इलहाम, कश्फ़ तथा सपनों का वर्णन करता हूँ जो आप रज़ी. ने अपने मुस्लेह मौऊद होने की घोषणा के अवसर पर बयान फ़रमाए थे। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि-

सबसे पहली चीज़ जो इस पद की ओर संकेत करती है वह मेरा एक इलहाम है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन काल में ही मुझे हुआ और मैंने जाकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बता दिया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसको अपने इलहाम की कापी में लिख लिया। पहले मैं इसे केवल ख़िलाफ़त के सम्बंध में समझता था परन्तु अब मेरा ध्यान इस ओर गया है कि इस इलहाम में मेरे इस पद की ओर संकेत था जो अल्लाह तआला की ओर से मुझे मिलने वाला था। वह इलहाम यह था कि إِنَّ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ अर्थात- निःसन्देह अल्लाह तआला तेरे मानने वालों को तेरा इंकार करने वालों पर क़यामत तक ग़ालिब रखेगा। इसमें एक बारीक संकेत है जो पेशगोई के पूरा होने के क्रम पर प्रमाण है तथा वह यह है कि यह वह इलहाम है जो हज़रत मसीह नासिरी को हुआ जिसका क़ुर्आन-ए-करीम में भी वर्णन है परन्तु वहाँ ये शब्द हैं وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ और यहाँ यह इलहाम है कि إِنَّ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ इसका कारण यह है कि हज़रत मसीह नासिरी का दावा मूसवी सिलसिले की

अन्तिम नबुव्वत का था तथा इस प्रकार के दावे के सम्बंध में पहले लोगों का विरोध आवश्यक होता है। फिर एक लम्बे समय के पश्चात वे इस नबी पर ईमान लाते हैं। परन्तु मुस्लेह मौऊद की भविष्य वाणी वाले को क्यूँकि अल्लाह तआला पहले ख़लीफ़ः बनाना चाहता था तथा ख़लीफ़ः को तुरन्त ही बनी बनाई जमाअत मिल जाती है इस लिए यहाँ جَاعِلُ الَّذِينَ वाले अंश की आवश्यकता नहीं थी। अतः إِنَّ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ फ़रमाकर अल्लाह तआला ने इस ओर संकेत फ़रमाया था कि अल्लाह तआला तुमको एक दिन बनी बनाई दे देगा तथा फिर इस जमाअत का सम्बंध तुम्हारे साथ दृढ़ से दृढ़ करता चला जाएगा यहाँ तक कि एक दिन वह तुम्हारी जमाअत छवि के रूप में कहलाएगी तथा कुछ लोग तुम्हारे विरोधी भी होंगे परन्तु तुम्हारी बैअत करने वालों को अल्लाह क़यामत तक तुम्हारे इंकार करने वालों पर ग़ल्बः देगा तथा यह प्रभुत्व तुम्हारे इमाम बनते ही आरम्भ हो जाएगा अर्थात जिस दिन यह जमाअत तुम्होरे हवाले होगी उसी दिन से तेरे मानने वालों का तेरे विरोधियों पर प्रभुत्व आरम्भ हो जाएगा। अतः देख लो, ऐसा ही हुआ। हज़रत मसीह नासिरी की जमाअत को तो तीन सौ वर्षों के बाद प्रभुत्व प्राप्त हुआ परन्तु यहाँ अल्लाह तआला ने जिस समय ख़िलाफ़त के पद पर मुझे खड़ा किया उसके कुछ सप्ताह के भीतर ही वे लोग जो मेरे विरोध में खड़े हुए थे तथा मेरे पद के इंकारी थे अर्थात पैग़ामी, अल्लाह तआला ने उन पर मुझे तथा मेरे साथियों को ग़ल्बः देना आरम्भ कर दिया और यह प्रभुत्व ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से दिन प्रतिदिन बढ़ता चला जा रहा है। पैग़ामी आज कह रहे हैं एक सपने को आधार बनाया गया, आप फ़रमाते हैं कि यद्यपि वह भी सपना नहीं क्यूँकि उसमें शब्द हैं। परन्तु यह इलहाम जो मैंने ऊपर लिखा है, यह तो इलहाम है तथा चालीस वर्ष पुराना है। अल्लाह तआला ने सूचना दी कि मैं एक जमाअत का इमाम हूँगा, कुछ भाग मेरा विरोध करेगा, अधिकांश लोग मेरे साथ मिल जाएँगे तथा उन्हें अल्लाह तआला क़यामत तक दूसरों पर ग़ल्बः देगा जो ख़िलाफ़त के साथ जुड़े रहेंगे। यह जो फ़रमाया कि तेरे मानने वालों को तेरा इंकार करने पर अल्लाह तआला क़यामत तक ग़ल्बः देगा, इसमें इस ओर संकेत है कि अल्लाह तआला एक दिन मुझे छवि के रूप में नबियों का अर्थात मसीह नासरी और मसीह मुहम्मदी का नाम देने वाला है क्यूँकि ख़लीफ़ः की जमाअत उसके जीवन काल तक होती है, निधन के पश्चात केवल नबियों की जमाअत अथवा उनकी छवि रखने वालों की जमाअत चलती है। इसी प्रकार كَفَرُوا के शब्द ने भी इस ओर संकेत किया है कि ख़िलाफ़त के बाद मुझे एक अन्य पद मिलने वाला है जो कुछ नबियों की छवि के रूप में होगा سُبْحَانَ اللهِ لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ

फिर आप फ़रमाते हैं कि दूसरे मुझे कश्फ़ हुआ जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जीवन में ही मैंने देखा था वह भी इसी पद का प्रमाण है। मैंने देखा कि मैं उस कमरे से निकल रहा हूँ जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रहते थे तथा बाहर आंगन में आया हूँ तो वहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैठे हुए हैं। उस समय कोई व्यक्ति यह कहकर मुझे एक पार्सल दे गया है कि यह कुछ तुम्हारे लिए है और कुछ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए है। कश्फ़ की अवस्था में जब मैं इस पार्सल पर लिखा हुआ पता देखता हूँ तो वहाँ भी मुझे दो नाम लिखे हुए दिखाई देते हैं और पता इस प्रकार लिखा है कि मुहीद्दीन और मुअीनुद्दीन को मिले। आप फ़रमाते हैं कि मैं कश्फ़ में समझता हूँ कि उनमें से एक नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का है तथा दूसरा मेरा नाम है। उस समय क्यूँकि मैं बच्चा था तथा हज़रत मुहीद्दीन इब्ने अरबी का नाम मैंने सुना हुआ नहीं था, केवल औरंगज़ेब के विषय में मैं जानता था उनका नाम मुहीद्दीन था इस लिए मैंने उस समय समझा कि मुहीद्दीन से अभिप्रायः मैं हूँ तथा हज़रत मअीनुद्दीन चिश्ती चूंकि हिन्दुस्तान में एक विख्यात बुज़ुर्ग हुए हैं इस लिए मैंने समझा कि मुअीनुद्दीन से अभिप्रायः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं परन्तु बाद में मुझे पता चला कि हज़रत मुहीद्दीन इब्ने अरबी भी एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग हुए हैं तो मैंने समझा कि मुहीद्दीन का अभिप्रायः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं जिन्होंने दीन को पुनः जीवित किया तथा मुअीनुद्दीन का अभिप्रायः मैं हूँ जिसने दीन की सहायता की। अतः दीन को जीवन देने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं और दीन की सहायता और सहयोग करने वाला मैं हूँ।

फिर आप फ़रमाते हैं कि तीसरा इलहाम जो मुझे उसी रंग में हुआ परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निधन के बाद, वह यह है कि اِعْمَلُوْا اٰلَ داوٗدَ شُكْرًا अर्थात- ऐ आले दाऊद, तुम अल्लाह तआला के शुक्र के साथ उसके आदेशानुसार कर्म करो। इस इलहाम के द्वारा اِعْمَلُوْا कहकर अल्लाह तआला ने हमें अपनी इच्छा पर सम्पूर्णतः आज्ञापालन करने का निर्देश दिया है तथा आले दाऊद कहकर अल्लाह तआला ने मुझे हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम से उपमा दी है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़लीफ़ः हुए थे तथा उनके बेटे भी थे। आप फ़रमाते हैं कि मुझे याद है कि

जब मैं अपने कुछ सहपाठियों सहित सैर पर जाते समय इसका वर्णन कर रहा था तो सहसा मेरे मस्तिष्क से आपके निधन की घटना निकल गई तथा मुझमें उत्साह उत्पन्न हुआ कि मैं दौड़ कर जाऊँ तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जाकर इसका वर्णन करूँ।

फिर आप फ़रमाते हैं कि चौथी गवाही उस सपने के सत्यापन का मेरा यह कश्फ़ है कि मैंने देखा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बैअतुद्दुआ में बैठा दुआ कर रहा हूँ कि सहसा मुझ पर प्रकट किया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इब्राहीम थे। फिर ख़ुदा तआला की ओर से मुझ पर स्पष्ट किया गया कि इस उम्मत में और भी अनेक इब्राहीम हुए हैं। मुझे बताया गया कि ख़लीफ़-ए-अव्वल इब्राहीम अधम हैं, फिर मुझे बताया गया कि इब्राहीम तुम भी हो।

फिर फ़रमाते हैं कि पाँचवाँ प्रमाण जो इस विषय में ख़ुदा तआला की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निधन के निकट मुझे मिला, यह है कि मैंने एक बार सपने में देखा कि एक घन्टी बजी और उसकी आवाज़ ऐसी है जैसे पीतल का कोई कटोरा हो तथा उसी किसी चीज़ से ठकोरें तो उसमें से टन की ध्वनि उत्पन्न होती है। उस घन्टी में से भी टन की आवाज़ आई परन्तु वह ध्वनि ऐसी सुरीली और सूक्ष्म है कि यूँ लगता है कि सारे संसार के संगीत का आनन्द उसमें भर दिया गया है। यह ध्वनि बढ़ती गई, बढ़ती गई यहाँ तक पूरे वातावरण में एक प्रतिमा की भांति छाकर एक फ़रेम बन गई। फिर मैंने देखा कि इस फ़रेम में एक चित्र उभरा जो किसी अत्यधिक सुन्दर अस्तित्व का है। फिर वह चित्र हिलना आरम्भ हुआ तथा थोड़ी देर के पश्चात उसमें से कूद कर एक अस्तित्व मेरे सामने आ गया जिसके विषय में मैं समझता हूँ कि वह ख़ुदा का फ़रिश्ता है और उसने मुझे कहा कि आओ मैं तुमको सूरः फ़ातिहः का पाठ पढ़ाऊँ। अतः उसने मुझे सूरः फ़ातिहः का पाठ देना शुरु कर दिया। यहाँ तक कि वह اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ की तफ़सीर शुरु करने लगा तो कहने लगा कि आजतक जितने मुफ़स्सिर (टीकाकार) हुए हैं उन सबने مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ तक तफ़सीर लिखी है परन्तु मैं तुम्हें उसके आगे की तफ़सीर भी बताता हूँ। इस प्रकार उसने पूरी सूरः फ़ातिहः की तफ़सीर मुझे पढ़ा दी। जब मेरी आँख खुली तो सपने में उस फ़रिश्ते ने जो बातें मुझे बताई थीं, उनमें से कुछ बातें मुझे याद थीं परन्तु मैंने उनको नहीं लिखा तथा बाद में मैं स्वयं भी उनको भूल गया। जब सुबह मैंने अपने इस सपने की चर्चा हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल से की तथा यह भी कहा कि सपने में जो बातें फ़रिश्ते ने बताई थीं उनमें से कुछ आँख खुलने पर मुझे याद थीं परन्तु सुबह उठने पर वे मेरे मस्तिष्क में से निकल गईं। तो हज़रत ख़लीफ़ः अव्वल नाराज़ होकर कहने लगे कि तुमने इतना ज्ञान नष्ट कर दिया, उनको नोट कर लेना चाहिए था। फ़रमाते हैं कि मगर वह दिन गया और आज का दिन आया, सूरः फ़रतिहः के द्वारा ख़ुदा तआला सदैव ही नए नए विचार मुझे सुझाता है। इस सपने की वास्तविकता यह थी कि मेरे भीतर की शक्ति में विशष रूप से सूरः फ़ातिहः का ज्ञान तथा साधारणतः पूरे कुर्आन को समझने का ज्ञान रख दिया गया है जो समय समय पर भीतरी इलहाम के साथ आवश्यकतानुसार प्रकट होता रहेगा। फिर आपने यह भी बयान फ़रमाया कि जिस समय जमाअत में मतभेद हुआ, अल्लाह तआला ने मुझे इलहाम के द्वारा बताया कि لَنُمَزِّقَنَّهُم अर्थात- हम उनको टुकड़े टुकड़े कर देंगे। उस समय ये लोग अपने आपको 95 प्रतिशत कहा करते थे परन्तु अब उनकी क्या स्थिति है, अल्लाह तआला ने उनको इस भविष्य वाणी के अनुसार वास्तव में टुकड़े टुकड़े कर दिया है। अतः ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब ने अपने देहांत से पहले लिखा कि मिर्ज़ा महमूद ने हमारे विषय में जो इलहाम प्रकाशित किया था, वह बिल्कुल पूरा हो गया और हम वास्तव में टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।

फिर आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अनेक बार मुझ पर अपने परोक्ष को प्रकट करके इस पेशगोई को सच्चा कर दिया है कि मुस्लेह मौऊद ख़ुदा तआला की सत्यात्मा से सुशोभित होगा। ये अल्लाह तआला के निशान हैं जो उसने मेरे द्वारा प्रकट किए हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि पेशगोई का तो लम्बा विस्तार है तथा आने वाले दिनों में जमाअतों में इस पेशगोई के विषय पर जलसे भी होंगे। एम टी ए पर प्रोग्राम आ रहे हैं, जमाअत के लोगों को उनमें अधिक से अधिक शामिल होना चाहिए, सुनना चाहिए ताकि इस पेशगोई का गहराई में भी विवेक प्राप्त हो। इस पेशगोई में असंख्य निशान हैं जो बड़ी शान से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु में पूरे हुए हैं।